सिंचाई :-

सरसों की फसल में दो से तीन सिंचाई का प्रबंधन कर उपज में वृद्धि किया जा सकता है पहली सिंचाई 25 से 30 दिनों में दूसरी सिंचाई 60 से 70 दिनों में जब फली बनना शुरू हो, तब कर लेने से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

फसल की कठाई :-

सरसों की फसल 120 से 150 दिन में पक कर तैयार हो जाती है अतः इस फसल की समय से कटाई अति आवश्यक है अन्यथा बालियाँ चटकने लगती है एवं उपज में 5 से 10% को कमी हो जाती है। पौधों की पत्तियों एवं फलियों का रंग पीला पड़ते ही इनकी कटाई कर लेना चाहिए। फसल की कटाई के समय यह ध्यान देना अति आवश्यक है कि सत्यानाशी प्रदुषित खरपतवार के बीज इनके बीजों के साथ ना मिले अन्यथा दूसरी तेल से मनुष्य में ड्रोपसी नामक बीमारी हो सकती है और सरसों के टहनियों को काटकर बंडल बना ले फिर खलिहान में इनके बीज निकाल लें एवं उचित नमी 8% बनाए रखते हुए इनका भंडारण कर लें।

कीट एवं रोग प्रबंधन :-

कीट एवं रोग प्रबंधन करने के लिए गर्मियों में खेतों की गहरी जुताई करें तथा रोग ग्रसित फसल अवशेषों तथा कूडा करकट को खेत से निकाल कर नष्ट कर लें। फसल चक्र अपनाएँ एवं साफ और रोग मुक्त प्रमाणित बीजों का प्रयोग करें। इनके बीजों की बुवाई 25 अक्टुबर तक अवश्य करें।

- काला धब्बा रोग की रोकथाम के लिए मैन्कोजेब (इंडोफिल एम –45) फफुंदीनाशी का 2.5 ग्राम को प्रति लीटर पानी में घोल कर छिडकाव करें।
- सफेद रतुआ रोग एवं मृदरोमिल आसिता की रोकथाम के लिए मैनकोजेब (इंडोफिल एम 45) या रेडोमिल एम जेड 75% डब्ल्यूपी फफूंदनाशक दवा का 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें।
- आरा मक्खी की संख्या को नियंत्रित करने के लिए समय से सिंचाई दें।
- चितकबरा कीट एवं आरा मक्खी के नियंत्रण के लिए निकाय गुडाई अवश्य करें।
- चंपा या माहुलाही के शुरुआती आक्रमण के समय इनसे ग्रसित डालियों को तोडकर नष्ट कर दे।
- परमक्षी कीट कोकिसमेला सेप्टेमपंकटेटा काईसोपलो कार्निया सिरफिड मक्खी दिखाई दे तो अनावश्यक कीटनाशक का प्रयोग ना करें इन कीटों को संरक्षित करें। लाही का प्रकोप यदि 10% से अधिक दिखलाई पडने पर इमिडाक्लोप्रिड का 3 मिलीलीटर, 10 लीटर पानी में घोल कर छिडकाव करें।

उपज एवं आर्थिक लाभ :-

सरसों की खेती यदि उपरोक्त उन्नत विधि से की जाए तो औसतन 13 से 15 क्विंटल उपज की प्राप्ति हो सकती है। सरसों की खेती एक हेक्टेयर में करने से 30,000 रुपया खर्च आता है और प्रति किलोग्राम सरसों का भाव यदि 50 रू किलो हो तो 51,000 रुपया शुद्ध लाभ कमाया जा सकता है।

लेखक :-

1.डॉ0 रंजय कुमार सिंह, वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान, कृषि विज्ञान केन्द्र. बोकारो
2.डॉ0 एसपी कुमार वैज्ञानिक (उद्यान),
3.डॉ0 सुषमा ललिता बाखला, वैज्ञानिक पशुपालन,
4.डॉ0 रुपा रानी, प्रयोगशाला सहायक
5.श्रीमति रश्मि कण्डुलना, फार्म मैनेजर
6.मो0 जुनैद आलम, सहायक

मार्गदर्शन : डॉ0 रेखा सिन्हा, निदेशक प्रसार शिक्षा, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची

आभार

भा0कृ0अनु0प0
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान पटना

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
कृषि विज्ञान केन्द्र, बोकारो
मोबाईल नं0: 9431339380

Royal Offset Printers, Ranchi #: 7004867819

बोकारो जिला में सरसों की उन्नत खेती

कृषि विज्ञान केन्द्र
बोकारो
बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची

तेलहनी फसलों में सरसों की खेती चतरा जिले की एक महत्वपूर्ण फसल है, वर्तमान में इस जिले में करीब 10000 हे0 भूमि पर इसकी खेती की जा रही है। जिले में इसकी औसत उपज 7 से 9 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। जो अन्य राज्यों के अपेक्षा काफी कम है। जबकि जिले की मिट्टी एवं अन्य संसाधनों का समुचित उपयोग करके उपज क्षमता बढ़ाई जा सकती है।

उन्नत किस्म, अनूसंसीय सस्य प्रक्रिया, संतुलित उर्वरक का व्यवहार, किट ब्याधी का नियंत्रण एवं कटाई प्रबंधन का उपयोग कर प्रति हेक्टेयर उत्पादन बढ़ाने के साथ–साथ किसानों की आमदनी भी बढ़ाई जा सकती है।

जलवायु एवं मिट्टी :–

सरसों की खेती जाड़े में की जाती है एवं इसकी अच्छी खेती के लिए 18–25 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है इसके फूल आने के समय वर्षा में अधिक आद्रता एवं वातावरण में बादल का छाए रहना नुकसानदेह है क्योंकि इससे माहू या चंपा कीटों का अधिक प्रकोप हो जाता है। जिससे सरसों की फसल का उत्पादन घट जाता है। इसकी खेती अच्छी जल निकास, जल धारण क्षमता वाली दोमट एवं हल्की दोमट मिट्टी में की जा सकती है। अत्याधिक अम्लीय या क्षारीय मिट्टी इसकी खेती के लिए उपयुक्त नहीं है।

उपयुक्त किसमें :–

किस्में. इस क्षेत्र के लिए सरसों की उपयुक्त किस्में एन. आर. सी. डी. आर– 2 (भारत सरसों) एन. आर. सी. एच. बी. 101 (भारत सरसों– 2) पूसा बोल्ड, पूसा सरसों 30 और **BBM-1** और **BBM-3** है।

भूमि की तैयारी :–

सरसों की खेती समतल एवं अच्छे जल निकास वाली बलुई दोमट से दोमट मिट्टी में की जा सकती है खेत की जुताई ट्रैक्टर चलित रोटावेटर से एकबार तथा कल्टीवेटर से भी एक बार कर ले, जिससे खेत की मिट्टी भूरभूरा हो जाए। प्रति एकड़ 1 से 2 क्विंटल डोलोमाइट या बुझा हुआ चुना का उपयोग मई–जून महीना में कर खेत की मिट्टी की अम्तियता को कम किया जा सकताहै। भूमिगत कीटों को नियंत्रित करने के लिए 1.5 क्विंटल प्रति एकड़ की दर से नीम की खल्ली का प्रयोग किया जाना चाहिए।

बीज बुवाई का समय मात्रा एवं मिट्टी उपचार :–

सरसों के बीज की बुवाई का उचित समय मध्य सितंबर से लेकर अक्टूबर अंत तक है। एक एकड़ में सरसों को लगाने के लिए 2 किलो ग्राम बीज की आवश्यकता होती है एवं बीजों के अच्छे अंकुरण के लिए अधिकतम तापमान 32 से 33 डिग्री सेल्सियस तापमान की आवश्यक्ता होती है। इनके बीजों की कार्बोडाजिम (1.5 ग्राम/किलो बीज) या बेभिस्टीन (2.0 ग्राम/किलो बीज) नामक रसायन से उपचारित करके लगाएं। मिट्टी जनित रोगों की रोकथाम के लिए ट्राइकोडरमा विरिडि फफूंद नाशी का प्रयोग 8 से 10 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से करें।

खाद्य/उर्वरकों का प्रयोग :–

सरसों की फसल में अनुशंसित खाद का प्रयोग मिट्टी जांच के आधार पर करने से फसल के उपज में वृद्धि के साथ–साथ आर्थिक क्षति से भी बचा जा सकता है गोबर की सड़ी खाद को बुवाई के करीब 1 महीने पहले खेतों में 1.6 टन प्रति एकड़ की दर से डालकर अच्छी तरह जुताई कर ले। अनुशंसित उर्वरकों में नेत्रजनः स्फुर पोटाश क्रमशः 32:24:16 किलोग्राम प्रति एकड़ है जिनको यूरियाः डीएपीः म्यूरेट ऑफ पोटाश के रूप में क्रमशः 49:52:27 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें। जिले में मिट्टी की अम्लियता को देखते हुए 8 किलो प्रति एकड़ की दर से सल्फर का प्रयोग बीजों की गुणवत्ता एवं रोग प्रतिरोध क्षमता बढ़ाने के लिए किया जाना अति आवश्यक है। फास्फोरस की आपूर्ति के लिए डीएपी के स्थान पर सिंगल सुपर फॉस्फेट का प्रयोग लाभप्रद है क्योंकि अलग से सल्फर देने की आवश्यकता इससे नहीं होगी। इस सरसो के बीजों को पंक्तियों में 30 सेंटीमीटर और 10 सेंटीमीटर पौधों की दूरी को बनाते हुए लगाएं इससे पौधा का विकास अच्छे से होगा एवं डॉलिया भी अधिक बनेगी। रासायनिक उर्वरकों मे डीएपी और म्यूरेट ऑफ पोटाश के साथ सल्फर का प्रयोग बीज गिराने से पहले कतारों में करें। यूरिया की मात्रा को दो भागों में बांट कर, पहला भाग को 25 से 30 दिनों के अंतराल पर और शेष भाग का भूरकाव 40 से 45 दिनों में करें सुक्ष्म पोषक तत्व में जिंक की कमी होने पर बीज की बुवाई से पहले 12 किलोग्राम प्रति एकड के हिसाब से जिंक सल्फेट का प्रयोग किया जाना चाहिए और बोरन की कमी होने से बोरेक्स का 4 किलोग्राम प्रति एकड़ का प्रयोग बुवाई से पहले मिट्टी में मिला कर करें। उपरोक्त पोषक तत्वों का प्रयोग कर सरसों के उत्पादन में वृद्धि किया जा सकता है।

जैविक खाद :–

मिट्टी की नमी और उर्वरक्त्ता बनाए रखने के लिए जैविक खाद यथा ढेंचा, सनहिम्प, ग्लारिसीडिताया अथवा टैफरोसिया के बीजों को वर्षा शुरू होते ही खेतों में डालकर 35 दिनों में अर्थात फूल आने से पहले उसी खेत की मिट्टी में मिला देने से अनुवांशिक उपज की प्राप्ति हो सकती है। इनकी बीज दर 6 से 7 किलोग्राम 1 एकड़ के लिए काफी है। जीवाणु खाद यथा पीएसबी (स्फुर गोलक जीवाणु) एवं एजोटोबेक्टर 10–15 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीज उपचार कर, मिट्टी में नेत्रजन एवं स्फुर की उपलब्धता को बढ़ाया जा सकता है।

पौधो का विरलीकरण :–

सरसों के बीज के बुवाई के 10–15 दिनों के बाद इनका विरलीकरण आवश्यक है ताकि इनके पौधों का समुचित विकास हो सके। दो पौधों के बीच की दूरी को 10–15 सेंटीमीटर रखते हुए बीजों को लगाने से पौधों की बढ़वार अच्छे होने से डालियां भी अधिक बनती है।

खरपतवार नियंत्रण :–

खरपतवार या जंगली पौधों को खुरपी, हैंड हो या खरपतवारनासी रसायनों द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है खरपतवार नासी रसायन फ्लुक्लोरालीन 45 ईसी. 1 लीटर सक्रिय तत्व को प्रति हेक्टेयर की दर से 600 लीटर पानी में घोल बना कर बीज की बुवाई से पहले मिट्टी में छिड़काव करना चाहिए या पैंडी मिचेलिन (आईसी) दवा का 1 लीटर सक्रिय तत्व के 600 लीटर पानी के घोल को प्रति हेक्टेयर की दर से बीजों की बुवाई के एक–दो दिनों के अंदर छिड़काव करें।